Sample Copy.Not For Distribution.

Sample Copy.Not For Distribution.

Publishing-in-support-of,

EDUCREATION PUBLISHING

RZ 94, Sector - 6, Dwarka, New Delhi - 110075
Shubham Vihar, Mangla, Bilaspur, Chhattisgarh - 495001

Website: *www.educreation.in*

© Copyright, Author

All rights reserved. No part of this book may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted, in any form by any means, electronic, mechanical, magnetic, optical, chemical, manual, photocopying, recording or otherwise, without the prior written consent of its writer.

ISBN: 978-93-85247-74-3

Price: ₹ 180.00

The opinions/ contents of the book is political satire and individual opinions/ thoughts of the author and do not represent the opinions/ standings/ thoughts of Educreation.

Printed in India

Sample Copy.Not For Distribution.

एहसास

सफर एक आम आदमी का

चित्रांकन–बिकास चन्द्र राव

EDUCREATION PUBLISHING
(Since 2011)
www.educreation.in

Sample Copy.Not For Distribution.

Sample Copy.Not For Distribution.

लेखक के बारे में

पश्चिम बंगाल में बर्धमान जिले के अंडाल में बिकास चन्द्र राव का जन्म २२ दिसंबर ,१९७९ में हुआ। मूलतः लेखक वर्तमान में झारखण्ड के देवघर जिले के सारठ प्रखंड के बंडाबरा नामक गाँव का निवासी है । पिता श्री भुखलाल राव और माता श्रीमती सुणामणि देवी के घर जन्में बिकास राव बचपन से ही छोटी छोटी जरूरतों से लड़ते रहे । पिता श्री भुखलाल राव के प्रभाव से उन्हें लेखन में रूची जागी और उन्होंने अपनी पहली कविता ''रानी लक्ष्मीबाई'' चतुर्थ कक्षा में लिखी ।

''मर्दानी, वीरांगना,न जाने कितनी उपाधियाँ
आपको वीरता के लिए मिली,
सपने देखे जो रातों को जग कर आपने
अब जा कर वो आजादी मिली ''

इनकी स्कूली शिक्षा केंद्रीय विद्यालय ,अंडाल में हुई। स्कूल के दिनों में इन्होंने अपनी कविता को खूब निखारा और ख्याति प्राप्त की। लगातार कई वर्षों तक ''बाल कवि'' की उपाधि धारण कर अपनी कविता को तराशते रहे । स्कूली दिनों में इनकी मुलाकात ''तितली''

Sample Copy.Not For Distribution.

से हुई और इन्होंने तितली को प्रेरणा स्वरुप अपनी कविता में समाहित किया और लिखते रहे ।

स्कूल छोड़ने के बाद कविता लिखने से जैसे उन्होंने सन्यास ले लिया और अपना जीवन सँवारने की जद्दोजेहद में फंसे रहे । उन्होंने MBA, MA(RD),CAIIB, PGDBF जैसी डिग्रियाँ हासिल की तथा वर्तमान में बैंक ऑफ बड़ोदा में शाखा प्रबंधक के रूप में कार्यस्थ हैं।

कविता में नैसर्गिक रूची के चलते इन्होंने जीवन की हर कठिनाइओं के बावजूद भी लेखनी नहीं छोड़ी और अब कविता उनके रग–रग में बस गयी है ।

इनकी पहली कविता संग्रह ''एहसास'' में आपको ऐसे ही कई लम्हों और भावनाओं का एहसास होगा जिन्हें हम सब अपने जीवन में महसूस करते हैं ।

मेरी असीम शुभकामनाएँ

अनंत कुमार

लेखक से संपर्क करें

e-mail : rao_bikash1979@rediffmail.com,
raobikash1979@yahoo.com

mobile : 9556110896

Sample Copy.Not For Distribution.

पुस्तक के बारे में

हमारे जीवन में मृगतृष्णा की अपार संभावनाएं होती है जिसे हासिल करने के लिए हम अपने अहसासों को कुचल कर एक दूसरे से प्रतिस्पर्धा की दौड़ में शामिल हो जाते हैं। उन दबे कुचले अहसासों को श्रृंखलाबद्ध कर इस पुस्तक में पिरोया गया है। इसमें उन पहलुओं को स्पर्श करने का प्रयास किया गया है जिसे हम जीवन की दौड़ मैँ या तो छोड़ देते हैं या उसे अपनी डायरी तथा पुराने संदूक मैँ सहेज कर रखते है।

मुझे आशा है कि आप इस काव्य संकलन के माध्यम से अपने बेजान पड़ी अहसासों को जीवंत रूप में महसूस कर पाएँगे।

– बिकास राव

Sample Copy.Not For Distribution.

Sample Copy.Not For Distribution.

प्राक्कथन

वैसे तो कविताएँ लिखने का शौक मुझे बचपन से है।मैंने अपनी पहली कविता चतुर्थ कक्षा में लिखी थी जिसकी प्रेरणा मुझे अपने पिताजी श्री भुखलाल राव जी से मिली। वो बचपन में मुझे नेताजी सुभाष चन्द्र बोस की वीरता युक्त कविताओं का पाठ करके सुनाते थे।वहीँ से कविताएँ लिखने की रूचि मुझमे जागी।मैंने अपनी पहली कविता रानी लक्ष्मीबाई की वीरता का गुणगाण करते लिखा था।

मैंने जीवन के हर पहलू को एक साधारण व्यक्ति की तरह महसूस किया है और साधारण और सरल शब्दों में अपने अनुभवों को इस किताब में संकलित करने का प्रयास किया है।

इस पुस्तक में मैंने सामाजिक तानाबाना ,आह खुशी ,दुःख ,प्रेम इत्यादि का एहसास कराने का प्रयास किया है।

मुझे आशा है कि मेरी पहली कविता संकलन आप सबों के ह्रदय में अपनी जगह बना पाएगी।आपकी बेबाक प्रतिक्रिया का मुझे इंतजार है।

"अंधकार है वहाँ जहाँ आदित्य नहीं,
मुर्दा है वह समाज जहाँ साहित्य नहीं"

Sample Copy.Not For Distribution.

आभार

आप सभी को मैं अपना आभार प्रकट करता हूँ। आप सब इस संकलन की रचना के प्रेरणा स्वरुप में भागीदार हैं।

आपका धन्यवाद ...

तितली (मेरी प्रेरणा)
पूज्यवर पिताजी श्री भुखलाल राव
पूजनीय माताजी श्रीमती सुनामणि देवी
पीयूष
आयुष
चंचला देवी (मेरी पत्नी)

Sample Copy.Not For Distribution.

विषय-सूची

सभ्यसमाज	02
गरीब	05
संघर्ष	07
वैश्विकरण	10
मेरा नंबर कब आएगा ?	12
फिर तुम क्यों आए	14
समर्पण	17
प्रेम का अंतिम किस्त	19
बेवफ़ा समझा था	21
अब दरवाजा बंद कर लो	24
क्या मैं मर रहा हूँ ?	27
दिल हमारा लगा रहा	30
अकेला मानव	33
अंतर्द्वंद	35
संजोए यादें	37
अनोखा व्याह	39
समझदार प्राणी	42
कैसे जी रहे हैं ?	44
कब आएगी तुम्हारी सवारी	46
एक आयल पेंटिंग	49

Sample Copy.Not For Distribution.

दीवाली के बाद 52
बदलता रुख़ 54
चलो अच्छा हुआ 56
उसे होगा दिल से जाना 58
सरकारी अधिकारी 60

Sample Copy.Not For Distribution.

Sample Copy.Not For Distribution.

सभ्यसमाज

एक आम आदमी, उसका आम सफर,
समझना, समझाना, समझौता जीवन भर,

रेत से सपने, हाथ न आए
जतन करो जितने, उस पर चलती
किस्मत की कटारी, आज मैं हारा
कल तुम्हारी बारी,

मध्यम वर्ग का दर्जा,
रोटी, कपड़ा, मकान के लिए कर्जा,

बेबसी में चरित्र को दीवार पर टांगा,
सुबह अमानुष सा रूप धरा,
शाम को भगवान से माफी माँगा,

समझौतों का गुबार कहीं तो फूटेगा,
चार सालों में क्यों नहीं सड़कें टूटेंगी,
बेशक देश लहूलुहान होगा,
यूँ ही बदस्तूर आम आदमी का
जीवन चला जा रहा,
आम आदमी, आम आदमी को छला जा रहा,

Sample Copy.Not For Distribution.

क्या चरित्र रुपयों और बेबसी की मुहताज है?
क्या यही हमारा सभ्य समाज है ?

Sample Copy.Not For Distribution.

बिकास राव

Sample Copy.Not For Distribution.

गरीब

कल रात ठंड से ठिठुरकर,
चौराहे पर एक बुढ़िया मर गयी,
उसकी कराह पर न तुम जागे,
न हम जागे,
न जागा ये शहर,
दूर कहीं आपस में लड़कर
दो बंदर मर गए,
हजारों कंधे तैयार हो उठे,
उसके जनाजे पर,

कहीं मंदिर–निर्माण के चंदे उगाहे गए,
भक्तों के शिविर लगाए गए,
दो गज कफन,
चार कंधे को तरसती,
लाचार गरीब मानव
अंततः चील कौओं द्वारा अपनाए गए।

Sample Copy.Not For Distribution.

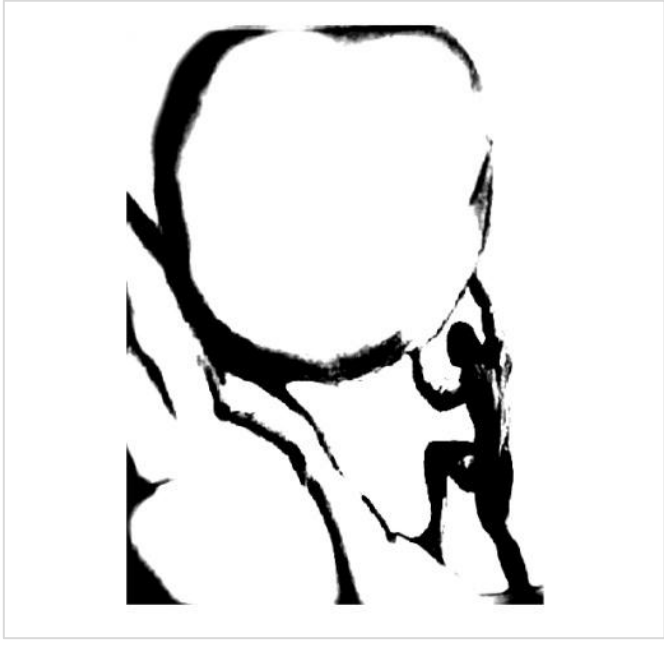

Sample Copy.Not For Distribution.

संघर्ष

साहिल पर बैठे सीपियों से
मोती निकलने का इंतजार करना,
कर्मठ मनुष्य की फितरत नहीं होती,
बार बार लहरें किनारों से
टकराकर वापस चली जाये,
लौटकर न आये वो ज्वार, ज्वार नहीं होती,
थककर मनुष्य जो बैठ जाये,
उसकी नैया पार नहीं होती,

दादी के किस्से का कौवा,
गर थककर हार गया होता,
कंकड़ उठाते–उठाते, गर मन मार गया होता,
मीठे पानी का घूंट न वो पी पाता,
न हमें कोई पाठ पढ़ा जाता,

सूर्योदय से सूर्यास्त तक,चर्चगेट से अम्बरनाथ तक,
ट्रेन की धक्का–मुक्की में,पसीने की चिपचिपाहट में,
बारिश के बौछारों से, साल के छप्पन त्योहारों से,
ट्रैफिक पुलिस के हवलदारों से,
हम ही दो चार हाथ किया करते हैं,

Sample Copy.Not For Distribution.

कौन कहता है हम जिंदगी से खफा हैं,
परेशानी जेब में लिए घुमा करते हैं ,

हार से थककर,
क्या दादी के कहानी का लोमड़ी
दूसरी बार,तीसरी बार,
छलांग नहीं लगाया होगा,
अपनी पूरी ताकत से अंगूर का
मिठास चखा नहीं होगा,

बार बार लहरों के थपेड़ों से चट्टानें
अपना चरित्र नहीं बदलती,
बगैर संघर्ष तो साँस भी नहीं चलती ।

Sample Copy.Not For Distribution.

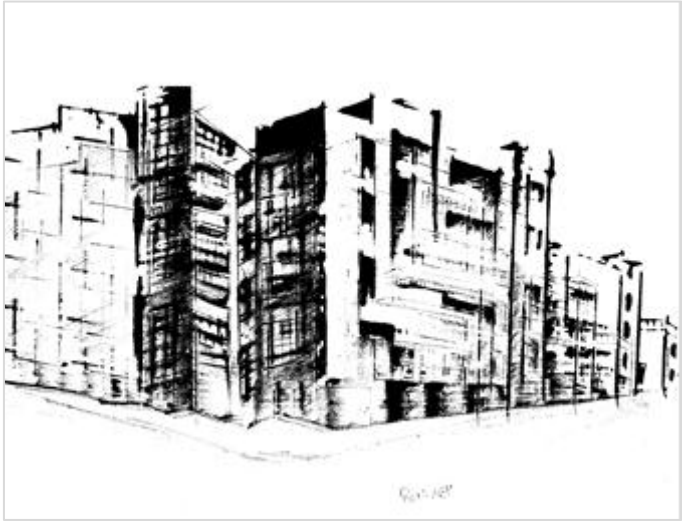

Sample Copy.Not For Distribution.

वैश्विकरण

इन्सानों की इंसानियत पर हँसनेवालों,
मखमली परदों के पीछे से झाँकने वालों,
अपनी ऊंचाई पर यूँ दंभ न भर,

कभी हमारा भी अस्तित्व हुआ करता था,
इस मिटटी का आशीष हुआ करता था,
पर वैश्विकरण की ऐसे बयार बही,
मनुष्य समझ न सका,
क्या गलत क्या सही,
आज भी गर गौर से देखोगे,
जमीन के नीचे दबे
वो अस्थि–पंजर हमारे हैं,
और वो रक्तरंजित खंजर तुम्हारे हैं ।

Sample Copy.Not For Distribution.

Get complete Book
At Educreation Store
www.educreation.in

Sample Copy.Not For Distribution.

एहसास

यूँ तो पल - पल हम अपनी छोटी - छोटी आकाँक्षाओं का गला घोंट कर जीवन की प्रतिस्पर्धा में जम कर जी जान से जुटे रहते हैं और इस दौड़ के पीछे न जाने कितनी यादों को चप्पल के नीचे घुट - घुट कर मरने की आदत सी हो जाती है.

मैंने वक़्त के खूंटे पर,
यादों की कमीज़ टाँग रखी है,
फ़ुरसत के पलों में कभी - कभार
पहन लिया करता हूँ,

खून से सने अख़बार
दरख्तों में सजा कर रखे हैं,
अतीत को बांधकर उसमें धीरे - धीरे
दरिया में बहाया करता हूँ,

जिंदगी काफी आगे निकल चुकी है,
बेंच पर अकेला मैं अपने अक्स से
सवाल - जवाब किया करता हूँ,

- बिकास

लेखक से संपर्क हेतुः
bikashchandra@educreation.in

EDUCREATION
PUBLISHING (Delhi)
www.educreation.in

Also available as an eBook
POETRY
ISBN 978-93-85247-74-3

Sample Copy.Not For Distribution.